''डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के साहित्य में जीवन मूल्य''

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़ आगरा

की हिन्दी विषय की पी–एच.डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

'रूपरेखा'

2017

निर्देशिका | **शोधार्थिनी**

प्रो. शर्मिला सक्सेना | मोहिनी कश्यप

हिन्दी विभाग | एम.ए., एम. फिल् हिन्दी

हिन्दी विभागाध्यक्ष | **कला संकाय प्रमुख**

प्रो. शर्मिला सक्सेना | प्रो. रागिनी रॉय

(हिन्दी विभाग–कला संकाय)

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़

आगरा–282005

''डॉ० महेंद्रसागर प्रचण्डिया के साहित्य में जीवन–मूल्य''

शोध परिचयः–

संसार की विविध भाषाओं के विविधमुखी साहित्य में हिन्दी साहित्य विशेष रूप से चर्चित हैं कहा जा सकता है कि विश्वस्तरीय साहित्य में हिन्दी साहित्य का प्रमुख स्थान है। इसके अन्तर्गत गद्य, पद्य की विविध विधाओं की चर्चा होती रही है। ये सभी विधायें मानवीय मूल्यों को सम्प्रेषित करने का सहज माध्यम है। प्रत्येक समाज की अपनी अलग मान्यताएँ, विचारधाराएँ और परम्पराएँ होती हैं, जिनसे मूल्यों का निर्माण होता है।

पुरातन काल से ही काव्य के विविध रूप साहित्य में प्रचलित है, जैसे गीत, दोहे, मुक्तक, सप्तक आदि। इनके माध्यम से व्यक्ति अपनी कोमलतम भावनाओं को बड़ी सहजता के साथ समाज के सामने संप्रेषित करता है। काव्य कोमलता का ही पर्याय नहीं होता, इसके अन्दर जीवन की समस्त संवेदनाएँ अपनी समस्त अनुभूतियों के साथ अभिव्यंजित की जा सकती है। भावनाएँ कोमल हो या परुष, काव्य उनके संप्रेषण का सशक्त माध्यम है।

''गद्यं कवीनाम् निकषं वदन्ति।'' उक्ति के अनुसार गद्य ही कवियों की कसौटी माना जाता है। सामान्यतः चिंतन की छंदमुक्त अभिव्यक्ति शैली को गद्य कहा जाता है। ज्यों–ज्यों जीवन सरलता और भावमयता को त्यागकर जटिलता की ओर बढ़ता है, उसमें विचार तत्वों का प्राधान्य बढ़ता जाता है वस्तुतः चिन्तम–प्रधान चेतना गद्यात्मक शैली में सफलता से अभिव्यक्त होती है। गद्य मूलतः विचार तर्क, चिन्तन तथा प्रत्यक्ष जटिल जगत से सम्बद्ध है। साहित्य जगत में गद्य के विविध रूप प्रयुक्त होते हैं जिनमें से प्रमुख हैं– निबन्ध, कथा, उपन्यास, जीवनी, संस्मरण आदि। यह सभी साहित्य में मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम है।

डॉ० महेंद्रसागर प्रचण्डिया ने अपने साहित्य में गद्य एवं पद्य दोनों पर समान रूप से लेखनी चलाई है। अपका समस्त साहित्य सात खण्डो में संग्रहीत है, जिन्हें मैं अपने अनुसंधान का आधार बनाना चाहती हूँ। डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के साहित्य में अहिंसा, सात्विकता और मानवप्रेम की अजस्र स्रोतस्विनी प्रवाहित

है। आपका साहित्य मूल्य–परक है। भारतीय एवं जैन साहित्य के मर्मज्ञ डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के साहित्य में जीवन के बदलते हुए विविध मूल्यों को देखा जा सकता है। वास्तव में मूल्य मानवीय समाज का सुदृढ़ आधार है, जिसमें सभ्यता और संस्कृति पर्यवसित होती है। 'मूल्य' शब्द को परिभाषित करते हुए डॉ. नगेन्द्र कहते हैं–**"मूल्य उस समवाय का नाम है, जो किसी पदार्थ को अपने लिए प्रमाता के लिए अथवा अपने परिवेश के लिए सार्थकता का निर्धारण करता है। पदार्थ का गुण होने के कारण मूल्य की सत्ता वस्तुपरक है, किन्तु प्रमातृ सापेक्ष होने के कारण वह व्यक्तिपरक है।"** यहाँ डॉ. नगेन्द्र ने पदार्थ की सार्थकता और उसके आंतरिक गुण को महत्व दिया है, जो मनुष्य के और उसके परिवेश के लिए महत्व रखता है।

डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के पूर्वज मध्यप्रदेश (राजस्थान) से उत्तरप्रदेश के मैनपुरी जनपद के गाँव दलीपपुर केलई में बस गए। इसी गाँव में 19 अक्टूबर, 1929 को कपड़े के व्यवसायी श्री इंद्रसेन प्रचण्डिया के पुत्र के रूप में आपका जन्म हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा उत्तरप्रदेश के जी.टी.रोड पर स्थित ग्राम 'सुरावली' के प्राइमरी स्कूल में हुई । मिडिल की परीक्षा कुरावली स्थित मिडिल स्कूल से उत्तीण की। आपने इंटर कुरावली से किया। आपने बी०ए० और एम०ए० आगरा कॉलिज, आगरा से पंडित जगन्नाथ तिवारी के मार्गदर्शन में किया। आपने सन् 1956 में एम०ए० हिन्दी में करने के पश्चात् सन् 1962 में लोकसाहित्य के आचार्य डॉ. सत्येन्द्र के कुशल निर्देशन में पी–एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

डॉ. प्रचण्डिया ने सन् 1952 में देवघर बिहार से 'साहित्यालंकार' की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप प्राकृत, अपभ्रंश, पालि, नेपाली, संस्कृत, गुजराती, राजस्थानी, अँग्रजी और उर्दू भाषाओं के जानकार थे। डॉ. प्रण्डिया का कर्मक्षेत्र सहस्त्र धारा तीर्थ के समान बहुआयामी एवं बहुविस्तृत है। वे न केवल वाणी के धनी प्रवचनकार थे बल्कि काव्यकार, गीतकार, निबन्धकार, जीवनीकार, संस्मरणकार, उपन्यासकार और संपादक भी थे। आपके बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित होकर आपको इंटरनेशनल विजडम एंड कल्चर सोसायटी, कानपुर से सन् 1962 ई. में तथा तुलसी शोध संस्थान सोरो, कासगंज से सन् 1975 ई. में 'विद्यावारिधि' की उपाधि से सम्मानित किया गया। अजमेर जैनसमाज ने 'व्याख्यान वाचस्पति सन् 1992 ई.

में तथा फिरोजाबाद जैन समाज ने सन् 1993 ई. में 'वाणीभूषण' की मानद उपाधि से डॉ. प्रचाण्डिया को सम्मानित किया।

डॉ.महेंद्रसागर प्रचण्डिया के समग्र साहित्य को सात खण्डों में संकलित किया गया है। प्रथम खंड में समय का सूरज, मीणा का स्वर, आत्मोदय, मानस मन्दाकिनी, गीत गंगा, ज्ञानकलश, अनमोल वचन, सीख सुरभि, समय से संवाद, आतम की आँखों से आदि गीत संग्रह संगृहीत हैं। द्वितीय खंड में शब्दों का शतदल, सिद्धान्त सतसई, इस्ततः आदि रचनाएँ संकलित हैं। तृतीय खण्ड में आचार्य श्री नगराजः व्यक्तित्व और कृतित्व, कामता प्रसाद जैन व्यक्तित्व और कृतित्व, तीन बातें और तीन यादें, वैदेही आदि कृतियाँ संकलित हैं। चतुर्थ खण्ड डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिा का शोध प्रबन्ध है इसके अन्तर्गत हिन्दी के बारहमासा साहित्य का वर्णन किया गया है। पंचम खण्ड आपका डी०लिट् का शोध प्रबन्ध है इसके अन्तर्गत जैन कवियों के हिन्दीकाव्य का काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन किया गया है। षष्ठ गद्य खण्ड (एक) में शब्द बोलते हैं जब अपना अर्थ, चिंतन का चंदन आदि निबंध संग्रह संगृहीत हैं। सप्तम खण्ड गद्य (दो) में सूक्तिसुधा, प्रकीर्णक आदि रचनाएँ संकलित हैं। समग्र अनुशीलन से ज्ञात होता है कि आप एक बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी थे, जिन्होने साहित्य की विविध विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयनः–

साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन का आधार बनाने से पूर्व उसकी सम्पूर्ण अवधारणा व उसके विविध प्रतिमानों से अवगत होना आवश्यक होता है। शोधार्थी के रूप में प्रतिमानों से अवगत होना आवश्यक होता है।

पी–एच.डी. में नामांकित होने के पश्चात् मैंने डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया का साहित्य पढ़ना आरम्भ किया जो कि मेरे पुस्तकालय में उपलब्ध है। आपका साहित्य निश्चित रूप से एक आदर्शोन्मुखी साहित्य है, जो मानवीय मूल्यों की जीवन्तता व उत्कृष्टता पर आधारित है। ऐसे साहित्य पर कार्य करना, निश्चित ही

मेरे लिए प्रेरणादायी है। वस्तुतः आपने मानवमूल्यों को केन्द्रबिन्दु में रखकर साधुवत् साहित्य की साधना की है। अपने शोध कार्य हेतु इसी लिए मैंने आपके साहित्य का चयन किया।

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्यः–

डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया सहज, सरल, सौम्य, सहिष्णु, सद्भावी और सच्चरित्र एवं मानवमूल्यों से सम्पन्न साहित्यकार थे। आपके गीतों, दोहों, मुक्तकों निबंधों तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य में अहिंसा, सात्विकता मानव प्रेम और जीवन मूल्यों की झलक देखने को मिलती है। मनुष्य के जीवन में मूल्य विशेष महत्व रखते हैं। मूल्य ही है जो मनुष्य को मनुष्य की श्रेणी में रखते हैं। अस्तु इस अनुसंधान के माध्यम से''डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के साहित्य में जीवन मूल्य'' को उजागर करना ही मेरे शोध विषय का उद्देश्य है।

शोध का महत्वः–

हिन्दी साहित्य जगत में गद्य और पद्य साहित्य का एक ऐसा सहज एवं सशक्त माध्यम है, जो सामान्य जन को सरलता से अपनी ओर आकर्षित करता है। मनुष्य कविता, कहानी, उपन्यास, दोहे इत्यादि को पढ़कर उसमें निहित उद्देश्य एवं मूल्यों को समझ सकता है। प्रस्तुत शोध विषय में ''डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के साहित्य में जीवन मूल्य'' का विवेचन किया जायेगा। तत्कालीन समाज में मानवीय मूल्यों का हनन हो रहा था। समाज में संवेदनशीलता और मानवीय मूल्य तो जैसे समाप्त होते जा रहे थे, और असंवेदनशीलता की स्थिति बढ़ती जा रही है। मूल्यों के महत्व के संदर्भ में समाजशास्त्री वुड्स कहते हैं– "मूल्य दैनिक जीवन में व्यवहार को नियन्त्रित करने के सामान्य सिद्धान्त है। मूल्य न केवल मानव व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं बल्कि वे अपने आप में आदर्श और उद्देश्य भी हैं।" प्रस्तुत शोध विषय में डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के समग्र साहित्य में जीवन मूल्य के विषय को प्रस्तुत किया जायेगा। इस विषय के अध्ययन के साथ हम विविध मानवीय जीवन मूल्यों को जान पायेंगे, जिन्होनें समाज के उन्नयन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अनुसंधान की पद्धतिः—

मनुष्य समाज का एक ऐसा जिज्ञासु और बुद्धिजीवी प्राणी है जो अपनी जिज्ञासाओं की पूर्ति करने हेतु निरन्तर अनुसंधान व खोज करता रहता है। मनुष्य में यह प्रवृत्ति जन्म से ही विद्यमान होती है। जिसके कारण मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुसंधान करता रहता है। साहित्य के क्षेत्र में किया गया अनुसंधान एक विशिष्ट प्रकार का होता है, क्योंकि वह साहित्य में विद्यमान समाज के यर्थाथ को लेकर चलता है। साहित्य क्षेत्र में अनुसंधान की विभिन्न पद्धतियाँ प्रचलित हैं। आपके साहित्य के चर्चा के समय मुख्य रूप से विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग मुख्यतः किया जायेगा, इसके साथ ही वर्णनात्मक विवरणात्मक आदि पद्धति प्रयुक्त की जायेगीं।

प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुआ कार्यः—

शोध कार्य हेतु डॉ० महेंद्रसागर प्रचण्डिया पर मेरे द्वारा चयनित विषय **"डॉ० महेंद्रसागर प्रचण्डिया के साहित्य में जीवन मूल्य"** विषय पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरे द्वारा विविध विश्वविद्यालयों की शोध सूची पत्रों को भली प्रकार से देखा गया और पाया कि वहाँ मेरे द्वारा चयनित विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरे शोध कार्य के पूर्व डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया पर जो शोध कार्य किया गया है उसकी सूची दी जा रही है। जिसके द्वारा यह सत्य निर्धारित हो जाता है कि मेरे द्वारा किया गया शोध कार्य नवीन एवं मौलिक होगा।

1. डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन

   शोध छात्रा— श्रीमती रेनू शर्मा

   कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में शोध कार्य किया जा रहा है।

2. अनुभूति और अभिव्यक्ति निबन्ध संग्रह का मूल्याकंन

शोध छात्रा– कंचन आतवानी

दयालबाग़ ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट, (दयालबाग़ आगरा) में एम.ए. में लघु शोध प्रबन्ध पर कार्य किया गया है।

शोधार्थिनी

मोहिनी कश्यप

रूपरेखा

''डॉ० महेंद्रसागर प्रचण्डिया के साहित्य में जीवन मूल्य''

प्रथम अध्याय– डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया का व्यक्तित्व और कृतित्व

(क) व्यक्तित्व

1. जन्म
2. जन्म स्थान और माता–पिता
3. बाल्यकाल
4. शिक्षा–दीक्षा
5. पारिवारिक जीवन इत्यादि।

(ख) कृतित्व

1. कथा साहित्य
2. काव्य प्रतिभा
3. गद्य साहित्य
4. आलोचनात्मक कृतियाँ
5. अन्य।

द्वितीय अध्याय– 1. जीवन मूल्य : सैद्धान्तिक विवेचन

2. मूल्य–अर्थ अभिप्राय

3. भारतीय दृष्टिकोण एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण,

4. जीवन–मूल्य, वर्गीकरण

(क) सामाजिक मूल्य,

(ख) राजनैतिक मूल्य,

(ग) आर्थिक मूल्य,

(घ) नैतिक मूल्य,

(ङ) धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्य,

(च) साहित्यिक मूल्य, अन्य।

तृतीय अध्याय –डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के कथा साहित्य में निहित जीवन मूल्य–

(क) उपन्यास साहित्य में निहित जीवन मूल्य

(ख) लघु कथाओं में निहित जीवन मूल्य

चतुर्थ अध्याय– डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के कविता (गीत) साहित्य में निहित जीवन मूल्य

पंचम अध्याय– डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया के गद्य साहित्य में निहित जीवन मूल्य

(क) निबन्ध साहित्य में निहित जीवन मूल्य

(ख) जीवनी साहितय में निहित जीवन मूल्य

(ग) संस्मरण साहित्य में निहित जीवन मूल्य

(घ) शोध साहित्य में निहित जीवन मूल्य

उपसंहार : अध्ययन की उपलब्धियाँ एवं दिखाएँ

परिशिष्ट

1. आधार ग्रन्थ

2. सहायक ग्रन्थ

3. पत्र पत्रिकाएँ

4. कोश/विश्वकोश

आधार ग्रन्थ

1. डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया समग्र (गीत खंड), सम्पादक प्रोफेसर आदित्य प्रचण्डिया, हिंदी साहित्य निकेतन (बिजनौर),2014.

2. डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया समग्र (दोहा खंड), सम्पादक प्रोफेसर आदित्य प्रचण्डिया, हिंदी साहित्य निकेतन (बिजनौर),2014.

3. डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया समग्र (जीवनी, संस्मरण, कथासाहित्य), सम्पादक प्रोफेसर आदित्य प्रचण्डिया, हिंदी साहित्य निकेतन (बिजनौर),2014.

4. डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया समग्र (हिंदी का बारहमासा साहित्य), सम्पादक प्रोफेसर आदित्य प्रचण्डिया, हिंदी साहित्य निकेतन (बिजनौर),2014.

5. डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया समग्र (जैन कवियों के हिन्दी काव्य काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन), सम्पादक प्रोफेसर आदित्य प्रचण्डिया, हिंदी साहित्य निकेतन (बिजनौर),2014..

6. डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया समग्र (गद्य खंड एक), सम्पादक प्रोफेसरआदित्य प्रचण्डिया, हिंदी साहित्य निकेतन (बिजनौर),2014.

7. डॉ. महेंद्रसागर प्रचण्डिया समग्र (गद्य खण्ड दो), सम्पादक प्रोफेसर आदित्य प्रचण्डिया, हिंदी साहित्य निकेतन (बिजनौर),2014.

सहायक ग्रन्थ

1. महिला रचानाकारों की कहानियों में जीवन–मूल्य, डॉ.भारती शेळके, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2008.

2. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में परिवर्तित नारी जीवन–मूल्य, डॉ. छाया देवी घोरपड़े, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2008.

3. साठोत्तरी कहानी में मानवीय मूल्य, विनीता अरोरा, नमन नई दिल्ली, 1999.

4. हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्य–संक्रमण, डॉ. वेदप्रकाश अभिताभ, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 1997.

5. गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में जीवन–मूल्य, रीता शर्मा, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2009.

6. मानव मूल्य और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, बलराज सिंहमार, खाका पब्लिशर्स दिल्ली, 2002.

7. साठोत्तरी हिन्दी खण्डकाव्यों में जीवन मूल्य, डॉ. रतु शर्मा, शिशिर प्रकाशन मेरठ, 2008.

8. हिन्दी साहित्यकोश भाग, 1 डॉ. प्रभाकर माचवे, सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा.

9. लोक भारती प्रकाणिक हिन्दी कोश, आचार्य रामचन्द्र वर्मा।

10. डॉ. हरदेव बाहरी राजपाल, हिन्दी शब्द कोश।

11. Personality development, Henry caly smith, MCGRAWHILL Book COMPANY, London

12. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामयिक दृष्टि, डॉ. मंजूर सैयद, चिन्तन प्रकाशन कानपुर, 2008.

13. आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य, हुकुम चन्द, भारती संस्कृत भवन, (जालंधर),1970

14. रांगेय राघव के उपन्यासों में मानव मूल्य, डॉ. सुनीता बनी, विकास प्रकाशन, 2007

पत्र एवं पत्रिकाऐं

1. शोधदिशा

2. वांग्मय